भारत की स्वतंत्र सेनानी मृदुला साराभाई

वाला तृषाबा जितेन्द्रसिंह
एम.ए. I
इतिहास भवन
महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी भावनगर विश्वविद्यालय
भावनगर, गुजरात
valatrushaba@gmail.com
Mo.7046430520

१) प्रास्ताविक :

आजादी के संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी के सवाल पर महात्मा गांधी के असहमति के विचार बनने के बाद बाल काल से जिस महिला का योगदान देखने को मिलता है, उसमे मृदुला साराभाई का नाम सम्मान से लिया जाता है। पिता अंबालाल जिन्होंने " केलिको मिल " उतराधिकारी प्राप्त करने के बाद देश में प्रथम श्रेणी का कपड़ा मिल बनाया। माता सरला देवी जो राजकोट के प्रतिष्ठित वकील हरिलाल गौशालिया की बेटी के घर ६ मई १९११ अमदावाद गुजरात में मृदुला साराभाई का जन्म हुआ।

(२) प्रारंभिक शिक्षा :

शिक्षा और लालन पालन में मैडम मांटेसरी की पुस्तक समीक्षा से प्रभावित अंबालाल ने घर में ही एक स्कूल " द रिट्रीट" की नींव रखी, जिसमें इंग्लैंड से दो शिक्षक नियुक्त किए गए। स्कूल में बच्चों के पाठ्यक्रम में संगीत नृत्य चित्रकारी मिट्टी के बर्तन बनाना और बढ़ाई गिरी भी सिखाई जाती थी। स्कूल के रचनात्मक माहौल में मृदुला की प्रारंभिक पढ़ाई हुई इस लिहाज से मृदुला खुशनसीब रही क्योंकि उस दौर में लड़कियों के प्रारंभिक शिक्षा के लिए पर्याप्त माहौल विकसित नहीं हो सकता था।

(३) अखिल भारतीय चरखा संघ में सक्रियता :

प्रारंभिक पढ़ाई खत्म करने के बाद मृदुला अपने भाई बहनों की तरह विशेष पढ़ने नहीं गई और महात्मा गांधी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ में दाखिल हो गई , जहां शिक्षा का माध्यम गुजराती था और पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय दिशा प्रदान किया जाता था। दस वर्ष की उम्र में मृदुला ने अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में कांग्रेस प्रतिनिधियों के लिए पियाउ लगाने का काम किया और अखिल भारतीय चरखा संघ के शिशु विभाग में सक्रिय रहे।

(४) जेल का अनुभव :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के वर्षो में महात्मा गांधी ने महिलाओं को घरों से निकलने और सहयोग करने के लिए प्रेरित किया। उस समय मृदुला गुजरात विद्यापीठ की छात्रा थी। वह सत्याग्रह और तमाम गतिविधियों में सामिल रही है। इस वजह से उन्हें साबरमती जेल में रखा गया जो जेल का उनका प्रथम अनुभव रहा। थोड़े समय के लिए रिहा करने के बाद यरवदा और बेलगाम के जेल में भेज दिया गया।

(५) पहली महिला जो कांग्रेस की महामंत्री रही :

१९३० में मृदुला कांग्रेस में सामिल हुई और कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों को संभाला। १९३६ में पंडित नेहरू ने उन्हे कांग्रेस के महामंत्री पद पर नियुक्त किया। कांग्रेस के इतिहास में यह पहला अवसर था जब किसी महिला को पद पर नियुक्त किया गया था। कांग्रेस में रहते हुए आलोचनात्मक रुख रखने के कारण उन्हें वह से निकाला भी गया क्योंकि कई मामले में मृदुला कांग्रेस कार्यसमिति में महिलाओं के साथ व्यवहार को लेकर प्रसन्न नहीं थी।

(६) सामाजिक कुरीतियां पर मुखर रही :

मृदुला की चिंता थी की महिलाएं अपनी निजी और पारिवारिक समस्या के कारण देश के स्वाधीनता आंदोलन के प्रति उदासीन नहीं हो इसलिए उन्होंने " ज्योति संघ और " विकास गृह " जैसे गृह की नींव रखी और तमाम सामाजिक कुरीतियों पर मुखर रही । मृदुला महिलाओं के सामाजिक आर्थिक और वैधानिक स्तर उठाने के साथ विभिन्न मोर्चे में भी सक्रिय रही । महिलाओं के मौलिक अधिकार , गर्भपात, तलाक और अवैध संतान जैसे मुद्दों पर राज्य में महत्वपूर्ण सिफारिशें करती रही सीमा रेखा के दोनों तरफ से उन्होंने हजारों महिलाओं को बाहर निकाला और उनका पुनर्वास कराया । यह उनके महत्वपूर्ण योगदान में गिना जाता है , जिसमें उनका व्यक्तित्व निखर कर सामने आया उनकी कार्यक्षमता और नेतृत्व के गुण भी प्रमाणित हुए ।

(७) तिहाड़ जेल में कारावास :

वह मृदुला शेख अब्दुल्ला को गिरफ्तार किए जाने के फैसले के खिलाफ थी और उनके समर्थकों के पक्ष में निरंतर समर्पण भाव से काम करती और लिखती भी रही, जिस कारण उनपर देशद्रोह के आरोप लगे । उन्होंने सभी संगठनों से इस्तीफा दे दिया । जिस कारण उन्हें तिहाड़ जेल में नजरबंद कर दिया गया । इन्हीं दिनों एमनेस्टी इंटरनेशनल ने उनको "अंतःकरण के बंदी" के रूप में मान्यता प्रदान की और वह भारत में एमनेस्टी इंटरनेशनल की भारतीय शाखा की नियमित बनी

(८) आजादी के बाद कोई सरकारी पद नहीं स्वीकारा :

आजादी के संघर्षों में शामिल महिलाओं में मृदुला उन लोगो में से हे, जिन्होंने आजादी के पश्चात कोई पक्ष नहीं लिया । एक कार्यकर्ता के रूप में देश की स्वतंत्रता, हिंदू मुस्लिम एकता, शरणार्थियों के पुनर्वास, अपहरण की गई महिला की खोज, महिलाओं की समानता और कश्मीर के सवाल पर सक्रिय रही ।

(९) महात्मा गांधी ने बेटी के रूप में स्वीकार :

महात्मा गांधी ने उनकी अंदर की क्षमता जो पहचान लिया था इसलिए उनको " मीरा " नाम देकर अपनी बेटी के रूप में स्वीकार लिया था । नेहरू उनके अभिन्न मित्र रहे, उनकी आलोचना करने से वह कभी पीछे नहीं रहे ।

(१०) मूल्यांकन :

मृदुलाबहन उच्च वर्ग और अमीर घर में जन्मी थी । उन्हे पढ़ने का शोख था । जब वो कॉलेज जाति थी तब वो गरीब बच्चो को पढ़ाती थी । और वो सब बच्चे उनके पिताजी की फैक्टरी में काम करने वाले मजदूर के बच्चे थे । अमीर घर में पैदा होने के बावजूद वो सादगी में जीवन जीती थी । कॉलेज के बाद स्वतंत्र सेनानी के रूप में उभर आई, ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ आवाज उठाई और जेलवास भी किया । और आजाद भारत की बहोत सारी महिला के लिए भी लडी और उनके अधिकार और महिलाओं के ऊपर हुए जुल्म के खिलाफ आवाज भी उठाई । भारत की आजादी दी के बाद कोई पद ग्रहण नहीं किया । हिंदू, मुस्लिम एकता और सरनार्थियो के पुनर्वास और महिलाओं की समानता के लिए आवाज उठाई, मृदुलाबहन को आज भी उनके त्याग और बलिदान और महानता के लिए याद किया जाता है । यह वह थी जो अमीरवर्ग में जन्मी क्रांतिकारी की मशाल थी । जिन्होंने पूरा जीवन गरीबों, महिलाओं और हमारे भारत देश को समर्पित किया था ।महिला समाजसेवी और प्रखर कार्यकर्ता के रूप में मृदुला साराभाई को हमेशा याद किया जाना चाहिए, जिन्होंने सामाजिक सवालों के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया ।

संदर्भ :

(१) " विमन फ्रीडम फाइटर्स " एम जी अग्रवाल ।

(२) मृदुला साराभाई : एक कारण से विद्रोही । दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस । बसु , अपर्णा (२००३) ।

(३) भारत के पुनर्जागरण में महिला अग्रणी, जैसा कि मुझे याद है : वर्तमान भारत की प्रतिष्ठित महिलाओं का योगदान । नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट । मानकेकर, कमला (२००२)।

(४) नवजीवन प्रकाशन द्वारा वाटरशेड, १९९५ : पीपी २६३-९ अप्रैल को अहमदाबाद में खुरशेदबहन नौरोजी और मृदुला साराभाई को प्रतिबंधित नमक बेचने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था । नमक सत्याग्रह :- महात्मा गांधी ।